भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक
डॉ. एस. जे. पवार
डॉ. एस. जे. जहागीरदार

PRINCIPAL,
B. G. V. C. Arts, Com. & Science Colleg
MUDDEBIHAL - 586212.

Co-ordinator,
ernal Quality Assurance Cell
V.C. Arts, Commerce & Scie
DDEBIHAL 586212. Dist. Vijayapur

सौम्य प्रकाशन, विजयपुर

BHAKTI SAHITYA KI PRASANGIKATA

ISBN 978-93-83813-51-3

Publisher : Soumya Prakashan
Mahabaleshawar Colony Darga Road
Vijayapur– 586 103 (Karnataka)

© Publisher

First Edition : 2020
Copies : 1000
Pages : xii + 312 = 324
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-51-3

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
महाबलेश्वर कॉलनी, दर्गा रोड
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2020

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 312 = 324
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विठ्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

Co-ordinator,
Internal Quality Assurance Cell
M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL 586212 Dist. Vij

PRINCIPAL
M. G. V. C. Arts, Com. & Science Co
MUDDEBIHAL - 586212

M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL
-586212
Dt: Vijayapur.

संतकाव्य की प्रासंगिकता

• डॉ. अब्दुर रहीम ए. मुल्ला

संत काव्य देश की राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के फलस्वरूप विरचित भावनात्मक एवं अनुभूतिप्रवण जनकाव्य है। इसका प्रेरणास्त्रोत था - सामान्य मानव का हितसाधना फलस्वरूप समाज में लिप्त न हो कर भी संत कवियों ने समाज-कल्याण का माग अपनाया और भावनाओं का गंभीर विचारयुक्त चित्रण किया। इस प्रकार संत साहित्य आध्यात्मिक अनुभूतियों का लेखा जोखा मात्र नहीं है, उसमें तत्कालीन जानजीवन का प्रतिबिंब भी विद्यामान है। धार्मिक रूढियों और सामाजिक - सांस्कृतिक परंपराओं का अंधानुसरण न कर इन्होंने वर्णाश्रम-व्यवस्था के विरोध-क्रोध लोभ-मोह-हिंसा आदि की निंदा, सहचारादि गुणों की प्रतिष्ठा शास्त्रीय ज्ञान की अनिवार्यता के निचेष्ट, आत्मनुभूति को प्रमाणिकता आदि पर बल दिया इस प्रकार संत काव्य साधना में तत्पर एवं सर्वजन में मंगलकामना करने वाले भक्तों के सरल हृदयों की सहज अनुभुति का चित्रण मात्र है। यह वह प्रकाशस्तंभ है, जो निराशा, वासना, प्रतिशोध और प्रातिहिंसा के अंधकार में भटकते हुए मानव समाज को शताब्दियों से प्रकाश दे रहा है और भविष्य में भी, इसका मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

संतकाव्य की विरोषता यह है कि इसमें शास्वायता का विरोध एवं लोकचेतना को क्रान्तिकारी भावना निहित है। जो कि अनुभूति की क्रान्तिकारी भावना निहित है। जो कि अनुभूति और अभिव्यक्ति के दोनों धरातलों पर हुई। जिसका संबध तत्कालीन जीवन-शैली और जीवन तथ्यों सें हुआ। और इसका प्रभाव दूरगामी रहा। किसी कवि के साहित्य की प्रासंगिकता कर अर्थ वर्तमान संदर्भ में उसकी उपदेयता का विवेचन है। इसीलिए कबीर-साहित्या की प्रासंगिकता से तात्पर्य आज के सामज के लिए उनके साहित्य की समीचीनता से है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या पन्द्रहवीं शताब्दी का रहस्यवादी संत बीसवीं शताब्दी के इस अतियभार्श्ववादी और भौतिकवादी वैज्ञानिकरण के लिए उपयोगी है ? ''मसि कागद छुयौ नहिं कलम गध्यों नहीं हात की घोषणा करने वाला एक वाणी विघामक आज के अतिबुध्दिवादी विवर्त समाज के लिए कोई संदेश जोड मत्रा है आखिर क्या कारण है कि उत्तर आधुनिकता के दौर में हमें संत एवं भक्त कवि याद आने लगे हैं ? क्योंकि आज का जीवन कबीरदास सूर, तुलसी और मीरा का जीवन नहीं है। दूसरे आज की कविता आध्यात्म, धर्म और सप्रदाय से प्राय: नहीं जुडी है प्रत्युत सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रंभावों से मस्त है और एक तरह से भावात्मकता भी। आज तो मैं तो कूता राम का एक हतो सो गयो श्याम संग कामद्दि नारि फियारि जिमि: मोर तो गिरधर, गोपाल, वाही बात भी नहीं है क्योंकि आधुनिक मानव जीवन-दृष्टि का निर्माण विज्ञान के नवीन अनुसंधानों के आलोक में हो रहा है। वह प्रत्येक समस्या का समाधान बौध्दिकता के स्तर पर ढूँढता है। यह संसार उसके लिए, पानी केरा बुलबुला और कागज की पुडिया नहीं वरन एक वास्तविकता है। वह जानता है कि मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक स्थिति उसके पूर्व जन्मो के कर्मों का परिणाम नही वरन इसके मूल में अधिकार एवं भक्ति सम्पन्न उन्नतवर्गीय मानवों का स्वार्थभाव है।

आज के मानव के लिए धर्म, दर्शन और नैतिकता के आदर्श उसकी कामभावना एवं अंह के द्वन्द्व उसकी मानसिक वृत्तियों के उदारीकरण के परिणाम है। मार्क्स, फ्राइड एवं अन्य पाश्चात्य विचारकों के प्रभाव के कारण पाप, पुण्य और नौतिकता आदि बातें अप्रभावित हो रही हैं। सत्य... न्याय. ईमानदारी, निष्ठा और कर्तव्यपरामणता जैसे मानवीय मूल्य समय के साथ बदल रहैं। समकालीन कवि मणिमधुकर लिखते हैं कि -

''श्रद्धा, सम्मान और प्रेरणा जैसे शब्दों को पान की पीक के साथ थूकता हूँ मैं।''

वैसे ही श्री जयशंकर प्रसाद के शब्दों में ''यह अभिनव मानव प्रज्ञा सृष्टि द्वयता में लगी निरंतर ही वणों की करती रहे वृद्धि अनजान समस्याएँ गढती रचती हो अपनी ही विशिष्ट कोलाहल कलह अनंत चले, एकता नष्ट हो बढ भेद।

बी.एल.डी.इ.संस्था

बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बसवनबागेवाडी, जि-विजयपुर (कर्नाटक)

तथा

स्व. बाबूराव शेट्टी ट्रस्ट, विजयपुर

के संयुक्त तत्वावधान में

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भक्तिसाहित्य की प्रासंगिकता

द्वि दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक - २४ तथा २५ फरवरी, २०२०

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ./श्री./श्रीमती Dr. AbdulRahim. A. Mulla. MGVC College Muddebihal. ने बीज वक्ता / प्रपत्र प्रस्तोता / प्रतिभागी/संयोजन समिति सदस्य के रूप में भाग लिया। विषय Santkavya ki Prasangikta.

डॉ. एस. जे. पवार
संयोजक

डॉ. एस. टी. मेरवाडे
प्राचार्य,
बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
बसवनबागेवाडी

M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL -586212 Dt: Vijayapur.

बि. ಎಲ್. ಡಿ. ಇ. ಸಂಸ್ಥೆ